हमारा वर्तमान संकट

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ४०

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ३ दिसम्बर, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

गलत और अन्यायपूर्ण

काफी अनिच्छासे मैं ये पंक्तियां लिख रहा हूं। सरकारके भीतर या अुसके बाहर रहनेवाले किसी भी सार्वजनिक कार्यकर्ताके साथ विवादमें पड़नेकी मेरी अिच्छा नहीं है, क्योंकि मेरे विचारसे हम सब अेक समान ध्येयके लिअे काम करनेवाले माने जाते हैं। परन्तु भारत-सरकारके व्यापार और अुद्योग मंत्रालय द्वारा समय समय पर कही जानेवाली कुछ बातें अुन सामाजिक कार्यकर्ताओंके साथ, जो भारी प्रतिकूलताओंके बावजूद महात्मा गांधीके कार्यक्रमके आर्थिक पहलुओंको आगे बढ़ाने और अुनका विकास करनेमें लगे हुअे हैं, अितना गहरा अन्याय करती हैं कि मैं अिस बातकी तरफ लोगोंका ध्यान खींचनेके लिअे मजबूर हो गया हूं। भारतीय अुद्योग मेलेके अुद्घाटनके सम्बन्धमें प्रकाशित अेक लेखमें श्री टी० टी० कृष्णमाचारीने अुन व्यक्तियोंको ताना मारा है, जो "अैसे देशमें जहां आश्रम फलते-फूलते हैं" मुट्ठीभर लोगोंके साथ हमेशा सर्वसत्ताधारी अीश्वरकी तरह काम करते हैं।

अैसा लगता है कि जो लोग शिक्षाके खयालसे और समाज-सेवा करनेके खयालसे आश्रम-जीवन बिताना पसन्द करते हैं, अुनका मजाक अुड़ानेकी बात आसानीसे श्री कृष्णमाचारीके मनमें अुठ आती है। क्योंकि अेक वर्षके कुछ पहले भी अुन्होंने खादी और अुससे सम्बन्धित आन्दोलनोंमें लगे हुअे लोगोंके कल्पित दावोंका मजाक अुड़ाकर अुन्हें अैसे मठाधिपति कहा था, जो निचले स्तरके लोगोंके पालनके लिअे ही कानून बनाना चाहते हैं। चूंकि मैं स्वयं कभी आश्रममें नहीं रहा, अिसलिअे यह पदवी मुझ पर लागू नहीं होती; अतः मैं बिना किसी तरहकी हिचकिचाहटके दृढ़तापूर्वक यह कह सकता हूं कि खादी और ग्रामोद्योगोंके क्षेत्रमें काम करनेवाले रचनात्मक कार्यकर्ता, जिनके बीच काम करनेका मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है, समाज-सेवकोंमें सबसे ज्यादा ग्रहणशील वृत्ति रखते हैं। बेशक, वे अपने आदर्शों पर दृढ़तासे डटे रहते हैं, वे सिद्धान्तोंके पालनके बारेमें अत्यन्त सावधान रहते हैं और अैसी समाज-रचनामें अुनकी श्रद्धा है जिसका मेल गांधीजीके अुपदेशोंके साथ बैठ सके। लेकिन वे सब संयुक्त निर्णयों पर पहुंचनेसे पहले चर्चा करनेमें और विचारोंके परस्पर आदान-प्रदानमें विश्वास रखते हैं। अुनका कभी तानाशाही भोगनेका अिरादा नहीं रहता, जैसा कि श्री कृष्णमाचारी अुन पर आरोप लगाते हैं।

अुसी लेखमें श्री कृष्णमाचारी अुन शिकायतों पर अपना तिरस्कार बरसाते हैं, जो अखिल भारतीय हाथ-करघा बोर्डके जोरदार प्रचारके खादी-अुत्पादन पर होनेवाले असरके बारेमें की गअी हैं। देशके किसी अेक भागमें खादी-अुत्पादनकी वृद्धिमें लगे हुअे लोगों द्वारा ही यह नहीं कहा गया है कि हाथ-करघा बोर्डके मातहत हाथ-करघा बुनाअीको जो विभिन्न प्रकारकी सहायताओंका वचन दिया गया है अुसके कारण हाथ-कताअीको थोड़ा धक्का पहुंचा है। अिसी तरहकी रिपोर्ट मध्यभारत, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, आन्ध्र और अुत्तर प्रदेशसे भी आअी है। अुनमें से पहले दो राज्योंमें राज्य-मंत्रालयोंने अिस बातको निश्चित बनानेके लिअे कदम भी अुठाये हैं कि खादी-अुत्पादनको कोअी नुकसान न पहुंचे। अत्यन्त नम्रतापूर्वक व्यापार और अुद्योग मंत्रीका ध्यान अिस स्थितिकी ओर खींचा गया और अुनसे प्रार्थना की गअी कि अुनके मंत्रालय द्वारा कायम किया हुआ हाथ-करघा बोर्ड अैसा कदम अुठावे तो ठीक हो, जिससे अुसके कार्यों और अ० भा० खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड — जिस पर भारत-सरकारकी तरफसे खादी-अुद्योगका योजनाबद्ध विकास करनेकी जिम्मेदारी है — के कार्योंके बीच कोअी संघर्ष पैदा न हो।

अिस नम्र प्रार्थनाके सार्वजनिक अुत्तरके रूपमें श्री कृष्णमाचारीके लेखमें अेक पैरा है, जो न केवल अिस सुझावका मजाक अुड़ाता है, बल्कि जिन लोगोंने व्यापार-अुद्योग विभागके मंत्रीके लिअे सर्वसत्ताधारी तानाशाहकी तरह काम करनेका सुझाव पेश किया है अुन्हें लोकतांत्रिक प्रक्रियाओंके अमलसे अनभिज्ञ भी ठहराता है। यद्यपि मेरे साथी और मैं सार्वजनिक कामकाजमें निष्णात तो नहीं हैं, फिर भी हम अितने विवेकशून्य नहीं हैं कि लोकतांत्रिक भारतमें किसी मंत्रीको छोटे रूपमें सर्वसत्ताधारी अीश्वर मान लें। लेकिन अिसे छोड़ दें, तो भी यह सच है कि हाथ-करघा बोर्डकी व्यापक और सर्वग्राही योजनायें सूतकी निश्चित पूर्ति और हाथ-करघा अुद्योग द्वारा आज तक कभी न भोगी गअी बाजारकी सुविधाके रूपमें बड़े आकर्षण सामने रखती हैं। जो लोग हाथ-कते सूतका अुपयोग करके कपड़ा बुनते हैं अुन्हें नियमित रूपमें सूत मिलता है और अुनका कपड़ा बिक भी जाता है। लेकिन हाथ-करघा बोर्डके कार्यक्रमके मातहत जो दूसरी सहायतायें दी जाती हैं, वे अितनी लुभावनी हैं कि अिस अुद्योगमें लगे हुअे लोग कभी कभी अुनके प्रलोभनमें फंसे बिना रह नहीं सकते। अिसका नतीजा कभी कभी यह आता है कि हाथकता सूत बुननेवाले मिलके सूतका अुपयोग करने लगते हैं; अिस वजहसे हाथ-कते सूतके अुत्पादनमें जो वृद्धि होती है, अुसका स्थानीय स्तर पर कपड़ा बुनवाना कठिन हो जाता है। ये दोनों बोर्ड भारत-सरकारके आश्रयमें काम करते हैं और अुसकी आर्थिक मददसे काम करते हैं। यह बिलकुल सीधासादा प्रस्ताव पेश किया गया है कि या तो दोनों बोर्ड वही या अुसी तरहकी राज्य-सहायता दें या कुछ समयके लिअे अैसे हिस्सोंमें हाथ-करघा बोर्डके सक्रिय कार्यक्रम पर अमल न किया जाय, जिनमें खादी-अुत्पादनका विकास तेज गतिसे हो रहा है। यही वह सादा प्रस्ताव है, जिसका अर्थ तानाशाही कदम अुठानेकी पुकारके रूपमें किया जाता है।

(अंग्रेजीसे)

वैकुण्ठभाअी महेता

www.vinoba.in

कल्याण-राज्य बनाम सर्वोदय-राज्य

[ता० १९–११–'५५ के अंकके अनुसंधानमें]

४

अभी तक हमने कल्याण-राज्यके अुद्देश्यों तथा कार्यका विचार किया। हमने यह भी देखा कि कल्याण-राज्य पूंजीवादी समाज-व्यवस्था और समाजवादी समाज-व्यवस्था दोनोंके चौखटेमें आसानीसे बैठ सकता है। दोनों समाज-व्यवस्थाओंके कुछ प्रधान लक्षण अुसमें पाये जाते हैं, अिसलिअे लोगोंका यह खयाल बन गया मालूम होता है कि कल्याण-राज्य और सर्वोदय-राज्यके आदर्श अेकसे हैं तथा कल्याण-राज्य और सर्वोदय-राज्य समानार्थक शब्द हैं। अिसका कारण सर्वोदय-राज्यके आदर्शोंके सही ज्ञानका अभाव है।

सर्वोदय-राज्यकी कल्पना

सर्वोदय-राज्य सभीका हित करना चाहता है। वह मुट्ठीभर लोगों या बड़े भागके लोगोंके अुदयकी भी हिमायत नहीं करता; वस्तुतः अुसका लक्ष्य 'अधिकसे अधिक लोगोंका अधिकसे अधिक हित' नहीं है। वह अूंचे तथा नीचे और बलवान तथा निर्बल सबका हित करना चाहता है। सब लोगोंका हित साधनेका ध्येय रखते हुअे वह अुपयोगितावादके 'सबसे बड़ी संख्याका हित' के सूत्रका अनुसरण नहीं करता, हालांकि सबके अधिकसे अधिक हितमें बड़ीसे बड़ी संख्याका हित आ ही जाता है। सर्वोदय-राज्यकी व्यवस्था आर्थिक या राजनीतिक व्यवस्था नहीं, बल्कि अहिंसक समाज-व्यवस्था और सबके सुखके लिअे सोची हुअी जीवन-प्रणाली है।

जीवनका अूंचा स्तर

सर्वोदय-राज्य अेक जीवन-प्रणाली होनेसे, अैसे समाजमें आर्थिक प्रगति मुख्यतः सम्पत्तिके अुत्पादनके गजसे नहीं नापी जाती। सम्पत्तिका अुत्पादन जीवन-स्तर अूंचा अुठानेके लिअे किया जाता है, परन्तु अिस बातका भी ध्यान रखना चाहिये कि निर्वाहके स्तरमें होनेवाली वृद्धि जीवनकी अुन्नतिको भी बढ़ानेवाली हो। अुसका लक्ष्य सबका सुख है, अिसलिअे महत्त्व केवल भौतिक सुखके प्रयत्नको नहीं बल्कि अधिकतर अुन प्रवृत्तियोंको दिया जाता है, जो सबके मानसिक विकासके लिअे अधिकसे अधिक स्वतंत्रता और अवसर प्रदान करनेवाले वातावरणको निश्चित बनाती हैं। आर्थिक प्रवृत्तियोंके स्वरूपका कोअी विचार किये बिना केवल अुच्च जीवन-स्तरका आग्रह विनाशकारी सिद्ध हो सकता है।

विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था

जिस अटपटी आर्थिक व्यवस्थाका परिणाम सामाजिक असमानता और शोषणमें आता है, अुसका मेल अहिंसक समाज-व्यवस्थाके अुद्देश्योंके साथ नहीं बैठता। अुद्योगीकरणके शिखर पर पहुंचे हुअे पश्चिमके देशोंके अुदाहरणसे तथा अुनके गंभीर सामाजिक प्रश्नों और आर्थिक बुराअियों सम्बन्धी अुनकी कठिनाअीसे हमें समय रहते चेत जाना चाहिये। सर्वोदय-राज्य सम्पूर्ण मानसिक और नैतिक विकासके साथ मानवको सुखी बनानेका ध्येय रखता है।

यंत्रोंके लिअे अुसमें कोअी आपत्ति नहीं होगी, परन्तु यंत्रोंका अुपयोग सामाजिक कल्याणके विरुद्ध नहीं जाना चाहिये। अुन्हें मनुष्यके श्रमका स्थान लेकर शोषणका कारण नहीं बनना चाहिये।

सुरक्षितता और स्वावलंबनकी भावना नैतिक प्रगतिकी पूर्व शर्त है, अिसलिअे अुत्पादनका स्वरूप तथा अर्थ-व्यवस्थाका तंत्र अैसा होना चाहिये, जिसमें सबको पूरा काम मिले और व्यक्तिको अपनी जीवनकी जरूरतोंके लिअे राज्य पर आधार न रखना पड़े। सर्वोदय-राज्यमें मालका अुत्पादन, खास करके रोजाना जरूरतकी चीजोंका अुत्पादन, व्यक्तिगत या सहकारी प्रयत्नों द्वारा घर बैठे किया जायगा। छोटे क्षेत्रफलवाले हर प्रदेशको जीवनकी प्राथमिक आवश्यकताकी चीजोंमें यथासंभव स्वयंपूर्ण और स्वावलंबी बनाया जायगा।

थोड़ेमें, सर्वोदय-राज्यकी अर्थ-रचना विकेन्द्रित स्वरूपकी होगी। विकेन्द्रित अुद्योग अैसे औजारों और यंत्रोंका अुपयोग करेंगे, जो हमारी प्रगतिमें बाधक न हों।

जनताकी आवश्यकताकी पूर्तिके लिअे जरूरी मालूम होने पर अैसे अुद्योगोंका भी स्थान रहेगा, जो विकेन्द्रित पद्धतिसे नहीं चलाये जा सकते। परन्तु अैसे बड़े अुद्योग खानगी अुद्योगपतियोंके हाथमें नहीं रहेंगे। अिन अुद्योगों पर राष्ट्रका अधिकार होगा या अुन पर राज्यका नियंत्रण रहेगा और वे मुनाफेके लिअे नहीं बल्कि लोगोंकी सेवाके लिअे चलाये जायंगे।

शोषणका अभाव

विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था और अहिंसक समाज-व्यवस्थाके ध्येयवाला सर्वोदय-राज्य किसी भी तरहके शोषणको सहन नहीं कर सकता। वास्तवमें अुसका तंत्र और अुसकी रचना ही अैसी होती है कि अुसमें किसी भी तरहके शोषणकी गुंजाअिश नहीं रहती। अुसमें आर्थिक सत्ताका केन्द्रीकरण नहीं होगा, क्योंकि अुत्पादन-शक्ति देशके सारे भागोंमें फैली हुअी होगी।

साधन और साध्य

सर्वोदयी व्यवस्थाकी स्थापनाके लिअे काम करनेवाला राज्य वांछित ध्येय सिद्ध करनेके साधनोंको बहुत ज्यादा महत्त्व देगा। अुचित साधनोंके अुपयोगके बारेमें खास सावधानी रखी जायगी, क्योंकि अनुभवने दिखा दिया है कि सिद्ध किये गये परिणाम हमेशा अुपयोगमें लाये गये साधनों पर आधार रखते हैं। ध्येयकी सिद्धि अपनाये गये साधनोंकी शुद्धताके ठीक अनुपातमें ही होती है। आदर्शकी ओर हमारी कूचमें सर्वोदय-राज्य अशुद्ध साधनोंका सर्वथा त्याग करता है।

अिस कारणसे, सर्वोदयका तत्त्वज्ञान नअी समाज-व्यवस्थाकी स्थापनाके लिअे हिंसा और अुसमें समाअी हुअी सारी बातोंको तिलांजलि देता है। आजकी व्यवस्था बदलनेमें हिंसा और घृणाको कोअी स्थान नहीं है। सर्वोदयका तत्त्वज्ञान मनुष्यके हृदय-परिवर्तनमें विश्वास रखता है, अुसका नाश करनेमें नहीं। वह गलत व्यवस्थाका अन्त करने या नाश करनेका ध्येय रखता है, अुस व्यवस्थाके शिकार बने हुअे लोगोंका नाश करनेका ध्येय नहीं रखता। चूंकि वह लोगोंका हृदय-परिवर्तन करना और अुन्हें बदलना चाहता है, न कि अुनका नाश करना चाहता है, अिसलिअे अुसमें सामाजिक न्यायकी प्राप्तिके लिअे केवल शांतिपूर्ण साधनोंका ही अुपयोग किया जा सकता है; वर्गद्वेषको प्रोत्साहन देना या हिंसक पद्धतिका आश्रय लेना अुसके तत्त्वज्ञानके खिलाफ है।

परन्तु अिसका यह अर्थ नहीं कि अन्याय बरदाश्त कर लिया जायगा। बुराअीका सामना करने तथा किसी भी शुभ ध्येयके खातिर लड़ाअी करनेके लिअे सर्वोदय अहिंसक असहयोगके हथियारमें श्रद्धा रखता है। वह मानता है कि घृणा और हिंसासे रहित वातावरणमें शांतिपूर्ण साधनों द्वारा जो कुछ प्राप्त किया जाता है अुसका स्थायी मूल्य होता है, क्योंकि अिस तरह किया जानेवाला सुधार सम्बन्धित पक्षोंके अधिकसे अधिक सहयोग और नहीं-जैसे विरोधसे होता है। आर्थिक सत्ता विशाल पैमाने पर बंटी हुअी होनेसे कोअी आदमी दूसरे आदमीका शोषण नहीं कर सकता और अुत्पादन प्रवृत्तियां अुत्पादनकी केन्द्रित पद्धतिके मूलमें रही हिंसासे मुक्त होंगी।

राजनीतिक सत्ताका विकेन्द्रीकरण

सर्वोदय-राज्यमें राजनीतिक सत्ताका केन्द्रीकरण नहीं होगा। विकेन्द्रीकरण सर्वोदयी व्यवस्थाका प्रधान लक्षण होगा, अिसलिअे

www.vinoba.in

बड़ी अिकाअियां छोटी अिकाअियोंका अथवा केन्द्रीय सत्ता अपनी अिकाअियोंका शोषण नहीं कर सकती।

आर्थिक क्षेत्रकी तरह राजनीतिक सत्ता भी बड़ी हद तक विकेन्द्रित होगी। छोटे प्रदेशोंके पास बाहरके किसी हस्तक्षेपके बिना अपना कामकाज चलानेकी आवश्यक सत्ता रहेगी। बड़ी अिकाअियोंके पास समान कामकाजकी कारगर व्यवस्थाके लिअे अुतनी ही सत्ता रहेगी, जितनी छोटे प्रदेश या विभाग अुन्हें सौंपेंगे। केन्द्रीय सरकारके पास समग्र राष्ट्रसे सम्बन्ध रखनेवाली बातोंकी व्यवस्था करनेकी ही सत्ता होगी। और यह सत्ता अुसे अिकाअियोंसे प्राप्त होगी। प्रदेशोंके हाथमें विशाल सत्ता होगी और वे आर्थिक दृष्टिसे स्वयंपूर्ण होंगे। असलिअे राजनीतिक व्यवस्थाका मुख्य लक्षण अर्ध-स्वतंत्र प्रजासत्ताककी तरह काम करनेवाले छोटे प्रदेश होंगे, जो केन्द्रीय सत्ताके साथ जुड़े होंगे। अिस केन्द्रीय संस्थाके हाथमें राष्ट्रकी अेकता टिकाये रखनेके लिअे आवश्यक अल्पतम सत्ता होगी। राजनीतिक जीवन पाये पर टिके हुअे शिखरवाले पिरामिडकी तरह नहीं होगा।

संक्षेपमें, सर्वोदय-राज्य और कल्याण-राज्यका आर्थिक और राजनीतिक ढांचा दो भिन्न चरम सीमायें प्रस्तुत करता है। पहलेमें सत्ता विकेन्द्रित हो जाती है, जब कि दूसरेमें वह केन्द्रित होती है। कल्याण-राज्य समाजहितके कदम जरूर अुठाते हैं, लेकिन वे प्रजाकी जीवन-प्रणालीमें क्रांति नहीं करते। बेशक, समाजहितके कदम प्रजाका हित करते हैं, परन्तु अुसका हित करते हुअे वे अुल्टा असर भी पैदा करते हैं।

समाजहित बनाम स्वतंत्रता

राज्यका व्यक्तिके जीवनके प्रत्येक पहलूसे सम्बन्ध होता है, यहां तक कि वस्तुओंकी अुचित व्यवस्थाके लिअे अुसे विशाल व्यवस्था-तंत्रकी जरूरत होती है। अैसे लोगोंकी अेक बड़ी सेना, जो अधिक अुपयोगी रचनात्मक कार्यमें लगाये जा सकते हैं, अपना समय, बुद्धि और शक्ति दफ्तरोंका रोजाना कामकाज करनेमें बरबाद करती है। कल्याण-राज्य सत्ताधारी और सामान्यतः विभागोंकी दृष्टि रखनेवाले अधिकारियोंके भारी दलसे लदा होता है। यह चीज अुस सामाजिक रोगको जारी रखनेकी शक्ति देती है, जिसे 'शासन-सम्बन्धी हाथीपांवका रोग' कहा जा सकता है।

अिस तरहकी व्यवस्था स्वतंत्रता और व्यक्तिकी सूझबूझका नाश करती है, जो अुससे होनेवाला सबसे बड़ा नुकसान है। विभिन्न प्रकारकी राहतें प्रजाको देनेके लिअे राज्य जबरदस्त सत्ता अपने हाथमें रखता है और वास्तवमें प्रजाके समस्त आर्थिक जीवनका नियंत्रण करता है। अुसमें व्यक्तिकी अपनी कुशलता और अभिरुचिके अनुसार धन्धा करनेकी स्वतंत्रता पर बड़ा प्रतिबन्ध लगा रहता है। अुसमें लोगोंको यह भी मालूम होगा कि अुनके लिअे व्यापार-रोजगारके अुतने ही क्षेत्र खुले होते हैं, जितनोंकी सरकार अुनके लिअे व्यवस्था करती है। जनताके जीवन पर असर डालनेवाली आर्थिक सत्ता राज्यके हाथमें अिस हद तक केन्द्रित रहती है कि कोअी भी व्यक्ति या संस्था राज्यकी नीतिका विरोध नहीं कर सकती। दूसरे, अुत्पादनकी केन्द्रित पद्धति काम करनेवाले लोगोंको देशके कुछ खास भागोंमें अिकट्ठा कर देती है, जिससे प्रजाके अलग अलग वर्गोंके लोगोंको निकट सहयोग करने और अेक-दूसरेको समझनेका मौका नहीं मिलता।

जिस राज्यमें राजनीतिक सत्ता केन्द्रित हो जाती है, अुसमें व्यक्ति देशके लाखों-करोड़ों लोगोंमें से अेक बन जाता है। अुस राज्यमें राजनीति निर्माण करनेके कार्यमें जनसाधारणका कोअी असर नहीं होता। अुसमें शासक होनेके बजाय शासित होनेका भाव अधिक होता है। "सरकार अुसके विचारमें बहुत दूरकी और बहुत हद तक अेक दुष्ट 'जमात' बन जाती है; वह अैसे आदमियोंकी अेक समिति नहीं होती जिसे अुसने अपने ही जैसे दूसरे लोगोंके साथ अपनी अिच्छानुसार शासन चलानेके लिअे चुना है।"*

व्यक्तिकी सूझ और स्वाश्रय

चूंकि कल्याण-राज्य जनहितके सारे कार्य हाथमें लेता है, असलिअे कुछ समय बाद नागरिक हर बातके लिअे राज्य पर आधार रखने लग जाते हैं। केवल संकटके समय ही नहीं बल्कि रोजाना जीवनमें भी वे राज्यकी ओर नजर रखते हैं और किसी न किसी रूपमें राज्य अुनकी मदद न करे तो अुनमें जीवनकी जरूरतें प्राप्त करनेके लिअे बहुत सूझबूझ नहीं रह जाती। राज्य पर अिस तरह हर बातके लिअे निर्भर रहनेके कारण अुनकी शक्ति और पुरुषार्थका ह्रास होता है और वे राज्यकी सत्ताके पूरी तरह अधीन बन जाते हैं। राज्यकी ओरसे किये जानेवाले लाभ प्राप्त करनेके लिअे अुन्हें अपनी स्वतंत्रताको तिलांजलि देनी पड़ती है। राज्य शोषणकी मात्रा कम करके अूपरसे तो प्रजाका हित करता दिखाअी देता है, परन्तु सारी प्रगतिके आधार मनुष्यके व्यक्तित्वका नाश करके भारी नुकसान पहुंचाता है।

सर्वोदय-राज्य अिस व्यवस्थासे सर्वथा विरुद्ध चीज है। अुसमें व्यक्ति सत्ताकी ओरसे किये जानेवाले किसी भी तरहके हस्तक्षेप या भयके बिना अपने कार्य करनेके लिअे अधिकसे अधिक स्वतंत्रताका अुपभोग करता है। अुसे अपनी सूझबूझ और कुशलताका अुपयोग करके अपना विकास साधनेका पूरा मौका मिलता है। अुसकी स्वतंत्रता पर केवल अितनी ही मर्यादा होती है कि अुसके काम समाजके दूसरे सदस्योंको किसी तरहका नुकसान न पहुंचायें। अपनी जरूरतें पूरी करनेकी साधन-सामग्री अुसके पास होती है और जीवनकी जरूरतोंकी पूर्तिके लिअे वह राज्य पर निर्भर नहीं रहता। सर्वोदयका तत्त्वज्ञान सत्ताके किसी भी प्रकारके केन्द्रीकरणका विरोध करता है। अुसमें अिकाअियोंको अधिक सत्ता सौंपी जाती है, असलिअे प्रतिदिनके व्यवस्था-कार्यमें प्रत्येक व्यक्ति सक्रिय रस लेता है। राजकाजकी छोटी अिकाअीमें लोगोंके लिअे परस्पर व्यक्तिगत सम्पर्क बनाये रखना जिस तरह संभव होता है, अुस तरह केन्द्रित राज्यमें तथा बड़े पैमानेकी केन्द्रित अुत्पादन-पद्धतिमें संभव नहीं होता। छोटी अिकाअीमें सबके सामान्य हितोंके सवालोंकी संपूर्ण रूपमें चर्चा होती है और सम्बन्धित लोगोंके मतको ध्यानमें रखकर निर्णय किये जाते हैं। शासन चलानेवाली सत्ता जनता पर अपनी अिच्छा लादती नहीं, बल्कि जनताकी अिच्छाके अनुसार किये गये निर्णयों पर अमल करती है। अिस प्रकार स्थानीय नागरिकताको क्रियाशील बननेके लिअे पूरा मौका मिलता है।

बुनियादी फर्क

चूंकि सर्वोदय-राज्यमें नागरिक सरकारके अंकुशसे स्वतंत्र रहते हैं और जीवनकी प्रत्येक बातके नियमनके लिअे सरकार पर नजर नहीं रखते, असलिअे राज्य अुनकी स्वतंत्रता पर आसानीसे कोअी हमला नहीं कर सकता। थोड़ेमें, सर्वोदय-राज्यका लक्षण यह नहीं है कि मुट्ठीभर लोग सत्ता प्राप्त करें, बल्कि अुसका सच्चा लक्षण यह है कि जब सत्ताका दुरुपयोग हो तो सब कोअी विरोध करनेकी शक्ति दिखायें। विकेन्द्रित समाजमें राज्य पर लोगोंका अवलम्बन कमसे कम हो जाता है, असलिअे राज्यकी सत्ता पर भी आम जनताका नियंत्रण और नियमन होता है।

अिन दोनों तत्त्वज्ञानोंकी सामाजिक और आर्थिक समस्याओंको हल करनेकी दृष्टिमें भी बड़ा फर्क होता है। अेकका मुख्य लक्षण

* बर्ट्रांण्ड रसेल: 'ऑथोरिटी अेण्ड अिंडिविज्युअल'।

www.vinoba.in

सत्ताका केन्द्रीकरण है। वह अुत्पादनकी केन्द्रित पद्धतिका स्वागत करता है; वह मानता है कि आर्थिक प्रवृत्तियोंका अुद्देश्य धन-दौलतका संग्रह करना है और प्रगति साधनेके लिअे किसी भी साधनको अपनानेके लिअे तैयार रहता है। दूसरा तत्त्वज्ञान सत्ताको विकेन्द्रित करनेमें विश्वास रखता है, आग्रहपूर्वक कहता है कि आर्थिक प्रवृत्तियां व्यक्ति और समाजके नैतिक स्वास्थ्यको नुकसान पहुंचानेवाली नहीं होनी चाहिये तथा अुचित और शांतिपूर्ण साधनोंके अुपयोगमें श्रद्धा रखता है।

अिसलिअे यह स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि अगर हम यह मानें कि कल्याण-राज्य सर्वोदय-राज्यके अुद्देश्यों, आदर्शों और ध्येयोंका प्रतिनिधित्व करता है, तो हम अपने-आपको धोखा देंगे। क्या सर्वोदयके तत्त्वज्ञानको माननेवाले लोग प्रसंगके अनुरूप अपना तेज दिखायेंगे और हमारे देशमें प्रचलित भ्रामक और गलत विचारोंको दूर करेंगे?

(अंग्रेजीसे) पी० श्रीनिवासाचारी

हरिजनसेवक

३ दिसम्बर १९५५

हमारा वर्तमान संकट

पाठकोंका ध्यान मैं अिसी अंकमें अन्यत्र अुद्धृत किये गये 'भारतका संक्रान्ति काल' नामक लेखकी तरफ खींचता हूं। वह कुछ माह पूर्व लिखा गया था। लेकिन वह जो प्रश्न अुठाता है और जो मुद्दे स्पष्ट करनेका प्रयत्न करता है, वे थोड़े भी पुराने नहीं पड़े हैं। वे बहुत गंभीर हैं और अैसे सब लोगोंको अुन पर ध्यान देना चाहिये, जो आजके भारतमें प्रचलित विचारों और घट रही घटनाओंका सावधानीसे अध्ययन करते हैं। आज हम अैसे संक्रान्ति कालसे गुजर रहे हैं, जैसा पिछली कुछ सदियोंसे हमारे लोगोंने कभी देखा नहीं था।

जैसा कि अुस लेखके लेखक कहते हैं, हमारे सामने खड़ा प्रश्न केवल आर्थिक नहीं है, हालांकि अूपरसे वह अैसा दिखता है और शासनके हमारे नेता अुद्योगीकरणके जरिये हमारा आर्थिक और औद्योगिक विकास करनेके बारेमें जोरोंसे चिल्ला रहे हैं। अब हमें यह समझना चाहिये कि पश्चिमके शिल्प-विज्ञान और आधुनिक अर्थशास्त्रने अपने ही विशिष्ट प्रकारके सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक तत्त्वज्ञानको जन्म दिया है, और अुस तत्त्वज्ञानने अपनी अनोखी जीवन-पद्धति अुत्पन्न की है। ब्रिटिश शासन और अंग्रेजी शिक्षाके कारण यह सब भारतमें भी हमारे पास आया है, और अुसे आज अेक अैसी प्रजामें जमानेका प्रयत्न किया जा रहा है जिसकी जीवन-पद्धति, संस्कृति और तत्त्वज्ञान अपनी अलग छाप और अनोखापन रखता है।

अिसके सिवा, हममें से ९० प्रतिशत लोग अपने सुदूर अतीतमें ही जीते हैं, और पश्चिमसे आनेवाले अिस नये युगके बारेमें लगभग अज्ञान हैं। अिसलिअे आज जिस अुद्योगीकरणकी बड़ी बड़ी बातें की जाती हैं, वह अेक छोटेसे वर्गकी ही प्रवृत्ति है; वह अपनी जन्मभूमि पश्चिमकी तरह भारतकी राज्य-संस्थाकी सजीव अुपज नहीं है। पश्चिम और पूर्वके मिलनकी १९ वीं सदीकी समस्या स्वतंत्र भारतके नये सन्दर्भमें मानो पुनर्जीवन प्राप्त कर रही है। अिसलिअे अेक गंभीर प्रश्न यह पूछा जाता है कि पश्चिमी ढंग पर भारतका अुद्योगीकरण करनेका क्या परिणाम होगा? पूर्वीय समाजके साथ पश्चिमका यह सम्पर्क सुन्दर समन्वयका रूप ग्रहण करेगा या सामाजिक रसायन विद्याकी किसी अनजानी तरंग द्वारा अैसी गति अुत्पन्न करेगा जो हमारे समाजके लिअे खतरनाक सिद्ध हो? अिन प्रश्नोंकी भारतमें हम चर्चा नहीं करते। क्या हमें अुनका भान है? आज हमारे देशमें जो कुछ हो रहा है, अुससे तो अिस बातका विश्वास नहीं होता।

नअी दिल्लीके पत्रलेखकने अपने लेखमें अिस रायका समर्थन किया है। अुन्होंने तीन महत्त्वपूर्ण सामाजिक समस्यायें गिनाअी हैं। हम अुनमें चौथी समस्या और जोड़ सकते हैं — अर्थात् सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिसे बलवान लोगों द्वारा निर्बलोंका शोषण और बार बार सामने आनेवाला जीप गाड़ियोंकी खरीदीसे लेकर भाखरा-नंगल बांध तकके भ्रष्टाचार, घूसखोरी, गबन तथा सरकारी पैसेके अनुचित अुपयोगका जीर्ण रोग। ये सब बातें निश्चित रूपसे हमें बताती हैं कि भारतमें पश्चिमी अर्थशास्त्र और शिल्प-विज्ञानकी नकल करनेकी प्रक्रियामें कहीं न कहीं भयंकर विसंगति है।

अुसी अंकमें 'मनस' के संपादक पत्रलेखक द्वारा अुठाये गये प्रश्नकी चर्चा करते हुअे कहते हैं:

> "शिल्प-विज्ञान जहां कहीं पहुंचता है वहां पहले पुरानी दस्तकारियां बिगड़ती हैं और बादमें खतम हो जाती हैं।... अिसके लिअे क्या किया जा सकता है? अिस अरुचिकर अुद्योगवादका विरोधी अगर कोअी अेकमात्र आन्दोलन हम जानते हों तो वह गांधीजी द्वारा आरंभ किया हुआ सर्वोदयका आन्दोलन है। लेकिन सर्वोदय अुद्योगीकरणकी ओर भारतकी दौड़ पर थोड़ी रोक ही लगा सकता है, वह 'प्रगति' के प्रवाहको अुलट नहीं सकता, जैसा कि हमारे भारतीय पत्रलेखकने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है।
>
> "पश्चिमको अपने शिल्प-विज्ञान संबंधी और औद्योगिक लाभोंकी कीमत मानवीय मूल्योंमें आंकनी होगी। पश्चिममें चार लेखकोंने अिस समस्या पर ध्यान दिया है। राल्फ बोसोंडीने (अपनी 'फ्लाअिट फ्रॉम दि सिटी' और 'दिस अगली सिविलाअिज़ेशन' नामक पुस्तकोंमें) व्यक्तिके लिअे अेक कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की है, आर्थर मॉर्गेनने (अपनी 'दि लांग रोड' और 'दि स्मॉल कम्यूनिटी' नामक पुस्तकोंमें) बुद्धिपूर्ण समाज-जीवनकी संभावनाओंकी जांच की है तथा लिमन ब्राअिसन और लुअिस ममफर्डने संपूर्ण संस्कृतिकी दृष्टिसे अिस प्रश्न पर हमला किया है।"

सम्पादकीय विचारोंसे काफी हद तक अिस बातका पता चलता है कि पश्चिममें जो कुछ चल रहा है वह संतोषप्रद या सबके हितमें नहीं माना जाता। सच पूछा जाय तो सारी दुनिया पर अेक सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक संकट धीरे-धीरे आ रहा है और अुसके कारण बहुत बड़ी हद तक मानवीय और आध्यात्मिक हैं, न कि आर्थिक, शिल्प-विज्ञान संबंधी या औद्योगिक, जैसा कि हममें से कुछ लोग बिना गहरा विचार किये कहते हैं। अिसलिअे गांधीजी द्वारा आरंभ किया हुआ सर्वोदय आन्दोलन बड़ा महत्त्व रखता है और अुसमें गहरा अर्थ भरा है। हम 'समाजवादी समाज-रचना' का नया सूत्र काममें लेकर अुसकी अुपेक्षा न करें।

९-११-'५५
(अंग्रेजीसे) मगनभाई देसाई

सर्वोदय

लेखक: गांधीजी; संपा० भारतन् कुमारप्पा
कीमत २-८-०
डाकखर्च ०-१२-०
नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

भारतका संक्रान्ति काल

[यह नअी दिल्लीसे अेक भारतीय पत्रलेखक द्वारा लिखा हुआ पत्र है, जो २० अप्रैल, १९५५ के 'मनस' में छपा था।]

भारत आज संक्रान्ति कालमें से गुजर रहा है, विशाल बिजलीघर खड़े कर रहा है, सिंचाअीके लिअे नदियों पर बड़े बड़े बांध तैयार कर रहा है और नये औद्योगिक कारखाने खोल रहा है, जिनका आधार ज्यादातर पश्चिम द्वारा विकसित आर्थिक और औद्योगिक रचनाओं पर है। लेकिन अर्धविकसित अर्थरचनाके अिस विकासने जो सामाजिक और नैतिक समस्यायें खड़ी कर दी हैं, अुनकी ओर बहुत कम ध्यान दिया जा रहा है। यंत्रविज्ञान-संबंधी अिस प्रगति और विकासके सामाजिक परिणामोंका मूल्य आंकनेके लिअे समस्याके 'गुणात्मक' अथवा मानवीय पहलूको अधिक समझनेका प्रयत्न करना होगा।

भारतको आज तीन महत्त्वपूर्ण सामाजिक समस्याओंका सामना करना पड़ रहा है, जिन्होंने नअी न होने पर भी हालके वर्षोंमें बहुत बड़ा रूप ग्रहण कर लिया है। ये समस्यायें हैं: (क) विद्यार्थियोंमें पाअी जानेवाली अनुशासनहीनताकी, (ख) अपराधोंकी बढ़तीकी और (ग) दिनोंदिन बढ़ रही बेकारीकी — खासकर शिक्षित मध्यमवर्गोंमें।

विद्यार्थियोंकी मौजूदा पीढ़ीमें संयमका तथा अध्यापकोंके लिअे आदरका अभाव है। पारिवारिक जीवनके टूट जानेसे परिवारका मुखिया बच्चों पर स्वस्थ और हितकारी प्रभाव नहीं डाल सकता, और स्कूल-कॉलेजोंमें कक्षाओंका आकार बहुत ज्यादा बढ़ जानेके कारण शिक्षक बच्चों और बड़े विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत ध्यान नहीं दे पाते। लेकिन अिनसे भी ज्यादा महत्त्व समाजमें फैले हुअे अुस सूक्ष्म वातावरणका है, जिसने, पुराने मूल्योंमें भारी अुथल-पुथल पैदा कर दी है। विद्यार्थियोंमें अेक तरहकी 'मजदूर आन्दोलन' की भावना फैली हुअी है; अगर कॉलेज या युनिवर्सिटीके अधिकारी अुनकी बात नहीं सुनते, तो विद्यार्थी हड़ताल कर देते हैं। न सिर्फ कानून और व्यवस्थाके प्रति अुनका आदर घट गया है, बल्कि अुनकी बौद्धिक सिद्धियां भी घट गअी हैं।

अपराधोंकी समस्या अिससे कम गंभीर नहीं है। अपराधोंकी केवल संख्या ही नहीं बढ़ी है, बल्कि अुनकी तीव्रतामें भी वृद्धि हुअी है। हिंसाके और खास करके डकैतियोंके (हिंसक दलों द्वारा की जानेवाली डकैतियोंके) अपराध पहलेसे ज्यादा बढ़ गये हैं।

बेकारीके विश्वसनीय आंकड़े नहीं मिलते, परंतु गांवों और शहरों दोनोंमें बेकारी व्यापक रूपसे फैली हुअी है। शिक्षित मध्यमवर्गकी बेकारी चिन्ताका मुख्य विषय हो रही है। बेकारीके लिअे कुछ राहतके कदम अुठाये जाते हैं, लेकिन व्यक्तिको खुद ही अपनी व्यवस्था यथाशक्ति करनी होती है। दानके पुराने स्रोत सूख गये हैं और बेकारोंको राज्यसे कोअी आर्थिक सहायता नहीं मिलती।

सामाजिक रोगके अनेक लक्षणोंमें से ये तीन लक्षण टीकाकी दृष्टिसे नहीं बल्कि यह सूचित करनेके लिअे बताये गये हैं कि भारत पश्चिमके पुराने दकियानूसी अिलाजोंकी नकल करके अपनी समस्यायें हल नहीं कर सकता। हमारे सामाजिक संगठनके टूटनेका बहुत कुछ कारण वह परिणाम है, जो भारतीय समाजके पश्चिमी यंत्रविज्ञानके संपर्कमें आनेसे पैदा हुआ है; अुस यंत्रविज्ञानका हम अधिकतर अन्धा अनुकरण ही करते हैं। अिसके फलस्वरूप पुरानी रचनायें और व्यवस्थायें टूट जाती हैं। परंपरागत सामाजिक व्यवस्थाओंके साथ पश्चिमी यंत्रविज्ञानका सामंजस्य स्थापित करनेका कोअी अध्ययनपूर्ण प्रयत्न नहीं किया जाता। पश्चिमी यंत्रविज्ञानका प्रयोग करनेसे पहले विभिन्न समूहोंके सामाजिक जीवन पर होनेवाले अुसके परिणामोंका सारे पहलुओंसे अन्दाज लगा लिया जाना चाहिये। यह अभी तक भलीभांति किया नहीं जा रहा है; अिसलिअे भारत सामाजिक विघटनकी अवस्थामें से गुजर रहा है। यहां मैं यह नहीं सुझाता कि मनुष्यकी स्थिति सुधारनेमें यंत्रविज्ञानका अुपयोग नहीं किया जाना चाहिये, बल्कि यह सुझाना चाहता हूं कि मनुष्यको यंत्रविज्ञानके अनुकूल न ढाला जाय; यंत्रविज्ञानको मनुष्यकी सेवामें लगाना चाहिये।

आजकल जब हम अपने चारों तरफ देखते हैं, तो अिस बातका यकीन नहीं होता कि हमें क्या हो रहा है। हम 'प्रगति' के बारेमें, जीवन-मान अूंचा अुठानेके बारेमें, नदियोंके बांधोंकी बड़ी बड़ी योजनाओंके बारेमें और भारी राष्ट्र-निर्माणके कार्य होनेके बारेमें बहुत कुछ सुनते हैं। लेकिन जब हम प्रत्यक्ष परिणामोंकी जांच करते हैं, तो हमें चारों ओर फूट, विघटन और बड़बड़ाहट ही देखनेको मिलती है। परिवारके जीवनमें और समाजके जीवनमें पहले जैसा मेलजोल और प्रयोजनकी अेकता नहीं पायी जाती और हमारा आचरण — भले पहले वह जैसा भी रहा हो — आज नीचे गिर गया है। दिनोंदिन बढ़ रही बेकारी और बढ़ रहे अपराधोंके कारण जीवन पहलेसे कम सुरक्षित हो गया है। अेक अर्थमें सभ्य और सुसंस्कृत जीवनके लिअे आवश्यक बहुतसे आंतरिक नियंत्रण हमने नष्ट कर डाले हैं और हमारा मुख्य अंकुश सरकार ही रह गअी है। यद्यपि वह हमारी लोकतांत्रिक पद्धतिसे चुनी हुअी सरकार है, फिर भी हममें से बहुत बड़ी संख्याके लोगोंका रुख अुसके प्रति अिस तरहका है मानो वह विदेशी सरकार हो।

लेकिन यह सब क्यों हो रहा है? अिसे अितिहास, सामाजिक मानसशास्त्र और अन्य कअी आधारों पर समझाया जा सकता है। सरकार शायद कहेगी कि यह स्थिति हमें भूतपूर्व शासनसे विरासतमें मिली है और अुसे सुधारनेके लिअे हमें काफी समय नहीं मिला है। दूसरे लोग, जिन पर सरकार द्वारा किये गये नये परिवर्तनोंका बुरा असर पड़ा है, सुधारके लिअे सरकारके गलत रास्ते चढ़े हुअे अुत्साहकी निन्दा करते हैं। और दूसरे लोग अपने-अपने झुकावके अनुसार देशके बंटवारेकी, पाकिस्तानकी, साम्यवादकी और हिन्दू महासभाकी निन्दा करते हैं। अिन सब दृष्टिकोणोंमें कुछ सत्य हो सकता है, लेकिन वह अुस अर्ध-सत्यकी तरह है जो प्रकाशकी तरफ ले जानेके बजाय गलत रास्ते ही ज्यादा ले जाता है।

हमारी वर्तमान स्थितिकी अैतिहासिक जांच करना संभव नहीं है, लेकिन अितना तो निश्चित कहा जा सकता है कि भारतीय समाज पर पश्चिमी संस्कृति और सभ्यताके संपर्कका असर अुसकी रचनाको तोड़नेवाला साबित हुआ है। शुरू शुरूमें, भारतीय समाजने अिस संपर्कका और परिवर्तनकी गतिका विरोध किया; अुसने अुसकी अुपेक्षा तभी तक की जब तक जीवनकी अूपरी सतहों पर ही अुसने अपना असर डाला। लेकिन कुल मिलाकर दो सदियोंके पश्चिमके संपर्कका प्रभाव मामूली नहीं हुआ है। मुख्यतः वर्तमान शताब्दीमें अुद्योग-धंधोंमें बड़े बड़े परिवर्तन हुअे जिन्होंने धीरे-धीरे हमारे आर्थिक, सामाजिक और नैतिक ढांचेको तोड़ दिया — यहां तक कि हमारे समाजकी संपूर्ण मनोवृत्ति पश्चिमके मूल्योंवाली हो गअी है।

हिन्दू जीवनके मूल्योंका — और अधिकतर भारतीय हिन्दू ही हैं — आधुनिक यंत्रविज्ञान और शासनकलाके मूल्योंसे सीधा विरोध है। परंपरागत हिन्दू जीवनके — जो अपने सामाजिक ढांचे और जीवनमें गहरा पैठा हुआ होता है — अुच्चतम मूल्य हैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। सर्वोच्च मूल्य धर्म है, जिसकी दूसरे मूल्य सहायता करते हैं, यद्यपि अंतिम और अलौकिक मूल्य तो मोक्ष ही है। हिन्दू समाज-व्यवस्था चाहे जितनी बिगड़ी या टूटी हुअी हो, आजसे लगभग ४० वर्ष पहले भी धर्म — जैसा कि भारतीय अुसे समझते हैं — का

www.vinoba.in

जीवनमें सर्वोच्च स्थान था न कि अर्थका, और बहुसंख्यक लोग मोक्षकी ही आकांक्षा रखते थे। हिन्दू जीवन-पद्धति — धर्म — संपूर्ण और अविभाज्य थी; अुसका हर भाग अेक-दूसरे पर आधार रखता था। लेकिन जब पश्चिमने अपनी पैसे पर आधारित अर्थरचना और सत्ता पर आधारित संस्कृति यहां दाखिल की, तब अुसने धीरे धीरे सामाजिक जीवनकी धर्म पर आधारित स्थिरताको बिगाड़ दिया और भंग कर दिया। प्राचीन पद्धतिमें आन्तरिक मूल्योंका महत्त्व था; आधुनिक जीवन-पद्धतिमें बाहरी चीजों और दिखावेका — कपड़ों, पैसे, मोटरकार, मकानों वगैराका महत्त्व है। प्राचीन पद्धतिमें काम, क्रोध, लोभ और मोहसे मुक्त रहनेको तथा अपनी वासनाओं और अहंकारकी विजयको सद्गुण माना जाता था, जब कि आधुनिक पद्धति वासनाओं, लालसाओं और अहंकारको पूरी छूट देती है और सफलता अुसमें पूजाकी वस्तु बन जाती है, भले वह किसी भी तरह प्राप्त की गअी हो। 'प्रगति' (प्रोग्रेस) आधुनिक दुनियाका दूसरा देवता है, हालांकि हममें से बहुतेरे नहीं जानते कि अिस शब्दका ठीक अर्थ क्या है। चार राग (काम, क्रोध, लोभ और मोह), जो अवांछनीय और मनुष्यको नीचे गिरानेवाले माने जाते थे, आजके जीवनमें वांछनीय गुण बन गये हैं। काम वांछनीय — लगभग अेक सद्गुण — बन गया है और अुसका आकर्षण साहसपूर्वक अखबारोंके पन्नोंमें और फिल्मोंमें दिखाया जाता है; अिसका नतीजा यह हुआ है कि आज लगभग अेक भी मनुष्य अुसके प्रभावसे मुक्त नहीं है। अुसी तरह, लोभ और मोह जैसे दूसरे अवांछनीय गुणोंने ध्येयोंका दर्जा प्राप्त कर लिया है। पूंजीवादी अर्थरचनामें लोभ अेक सद्गुण बन गया है। अुसके बिना कोअी धन नहीं प्रात कर सकता, और धनप्राप्तिका दूसरा नाम सफलता है। धर्म यदि बिलकुल अवांछनीय नहीं बना है तो भी पुराना तो पड़ ही गया है। 'प्रगति' ने अुसका स्थान ले लिया है।

बहुतसे लोगोंको यह विश्वास कराना कठिन है कि हमारी यह स्थिति हितकर नहीं है। अैसे बहुतसे लोग हैं जो वर्तमानसे परे दूसरे जीवनमें विश्वास नहीं करते, और जो सामाजिक या नैतिक नियमोंमें भी विश्वास नहीं रखते। अुनके लिअे अपनी तात्कालिक जरूरतें (या अधिक अुपयुक्त रूपमें वासनायें) ही सब कुछ हैं; अुन्हें सुखी रखनेके लिअे अधिकाधिक प्रमाणमें संतोष जरूरी होता है। ये लोग अधिकतर स्वलक्षी होते हैं। लेकिन समाजका गहरा निरीक्षण करनेवालेको अैसे सामाजिक तत्त्वज्ञानके — अगर अुसे तत्त्वज्ञान कहा जा सके (शून्यवाद अुसके लिअे अधिक अुपयुक्त होगा) — बुरे परिणाम दिखाअी दिये बिना नहीं रहते।

अिसमें कोअी शक नहीं कि अपराधोंकी वृद्धिके लिअे दूसरे सामाजिक और मानसिक कारण भी हैं। कुछ हद तक पिछला विश्वयुद्ध — जब हजारों लोगोंने बन्दूक-पिस्तौल वगैरा चलाना सीखा था, — देशका बंटवारा और अुसके फलस्वरूप हुअी घटनायें, लाखों लोगोंका अेक स्थानसे अुखड़कर दूसरे स्थानमें बसना, सफलता और धनकी पूजा, बाहरी आडंबर, फिल्में और अिससे कुछ कम गरीबी अिसके लिअे जिम्मेदार है। लेकिन मुख्य कारण तो परंपरागत धर्म और नैतिक मूल्योंका नाश ही है, जिनका स्थान किसी अन्य वस्तुने नहीं लिया है।

(अंग्रेजीसे)

भावी भारतकी अेक तसवीर

[दूसरी आवृत्ति]

किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १-०-० **डाकखर्च ०-५-०**

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४

पिछड़ी जातियां और नौकरीकी योग्यता

बम्बअीसे अेक हरिजन भाअी सरकारी नौकरियोंमें हरिजनोंको लेनेके बारेमें राज्योंकी नीतिमें पाये जानेवाले फर्ककी चर्चा करते हुअे लिखते हैं:

"बम्बअी राज्यमें अमुक लाभ हरिजनोंको नहीं मिलते, अैसा कहा जाय तो गलत नहीं होगा। अुदाहरणके लिअे, बम्बअी राज्यमें पब्लिक सर्विस कमीशनकी ओरसे निकलनेवाले नौकरीके विज्ञापनोंके लिअे अर्जी भेजनेकी फीस अन्य जातियों और हरिजनोंके लिअे अेकसी है, जब कि यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन दिल्ली और सौराष्ट्र सरकारके विज्ञापनोंकी फीसका स्तर (हरिजनोंके लिअे) कम होता है।

"अितना ही नहीं, सौराष्ट्र सरकारने तो योग्यताके स्तरमें भी अेक कदम आगे बढ़ाया है। गेजेटेड स्थानोंके लिअे भी जब दूसरी जातियोंके लिअे प्रथम श्रेणीका स्तर होता है, तब हरिजनोंके लिअे पास क्लास काफी माना जाता है; और जहां दूसरोंके लिअे पास क्लास ग्रेज्युअेट योग्य माना जाता है वहां हरिजनोंके लिअे अिन्टर पास होना काफी समझा जाता है। परन्तु बम्बअी राज्यमें अेकसी योग्यताके सिवा अनुभव भी मांगा जाता है।

"बम्बअी सरकार सौराष्ट्र सरकारकी तरह दो वर्षका फर्क न रखे तो कोअी हर्ज नहीं। परन्तु दूसरी जातियोंके लिअे पहला क्लास या दूसरा क्लास मांगा जाय तब हरिजनोंके लिअे पास क्लास काफी मानकर अुन्हें मौका दिया जाय तो भी बहुत होगा और हरिजनोंकी जल्दी अुन्नति होगी।"

यह मानना गलत नहीं होगा कि दूसरे हरिजन भी अैसे ही विचार रखते होंगे। मुझे लगता है कि अिस बारेमें थोड़ा गहरा विचार करनेकी जरूरत है।

हमारा संविधान धारा ३३५ में कहता है कि हरिजनों वगैरा परिगणित जातियोंके लिअे नौकरियोंके सम्बन्धमें विशेष राहत दी जा सकेगी; और वैसा करनेमें जातपांतके कारण जो भी भेदभाव करना पड़े वह आपत्तिजनक नहीं माना जायगा (धारा १५)। परन्तु अैसा करनेमें अेक मर्यादा यह रखी गअी है कि अिससे नौकरियोंकी कार्यक्षमता पर कोअी आंच न आनी चाहिये।

राष्ट्रकी समग्र दृष्टिसे देखा जाय तो यह शर्त बड़ी महत्त्वकी है; अिसमें कोअी मतभेद नहीं हो सकता। अिसलिअे अिस प्रश्न पर विचार करना होगा कि हरिजनोंके लिअे नौकरीकी योग्यतामें रिआयत रखना कार्यक्षमताकी दृष्टिसे कैसा माना जायगा।

नौकरियोंमें अमुक प्रतिशत हरिजनोंको लेनेका निर्णय अेक दूसरे प्रकारकी व्यवस्था आज की जा रही है। यह व्यवस्था अच्छी है। अिसी तरह धारासभाओंमें भी हरिजनोंकी नियत संख्या लेनेका संविधानने तय किया है। परन्तु अिससे योग्यताका स्तर नहीं अुतरना चाहिये। नियत संख्यामें लिये जानेवाले हरिजनोंमें भी अेक खास स्तरकी कमसे कम योग्यता तो होनी ही चाहिये। सवर्ण कहे जानेवाले वर्गोंकी होड़में न अुतरते हुअे भी हरिजनोंको अमुक योग्यताका दर्जा तो हासिल करना ही चाहिये। अैसी कोअी आवश्यक और अपवादरहित योग्यता सोच-विचार कर तय कर दी जानी चाहिये, जिससे कम योग्यतावाले अुम्मीदवार न लिये जायं।

पत्रलेखककी शिकायत अगर अैसे नियमोंके खिलाफ हो तो वह ठीक नहीं मानी जायगी। अुदाहरणके लिअे, मान लीजिये किसी नौकरीके लिअे कमसे कम अमुक नम्बर हासिल किये हुअे ग्रेज्युअेटको लेना है, तो अुसमें हरिजन अुम्मीदवारके लिअे अुससे कम स्तर रखना ठीक नहीं माना जायगा। परन्तु पिछड़ी जातियों या हरिजनोंको अमुक प्रतिशतमें लेनेकी बात सही है। अिसका मतलब यह है कि ज्यादा अूंचे नम्बरसे पास हुअे सवर्ण ग्रेज्युअेट अुम्मीदवार

www.vinoba.in

हों तो भी अुन्हें न लेकर कमसे कम आवश्यक योग्यता प्राप्त करनेवाले हरिजन या पिछड़ी जातियोंके अुम्मीदवार ही लिये जाने चाहिये। अिससे नौकरियोंकी कार्यक्षमता कम किये बिना अुन्हें नौकरियोंमें आवश्यक सलामती मिल जायगी, जो अुन्हें मिलनी चाहिये।

४–११–'५५ , मगनभाई देसाई

(गुजरातीसे)

भारतकी संस्कृतिका स्वरूप

[ता० १८–७–'५५ को अंचला पड़ाव (कोरापुट-अुत्कल) पर दिये हुअे प्रार्थना-प्रवचनसे।]

मनुष्यका लक्षण यही है कि वह समाजके लिअे त्याग करता है। जब अुसे त्याग और सेवा करनेका मौका मिलता है, तब खुशी होती है। लेकिन अंग्रेजोंके राज्यमें यहां पर पैसेकी कीमत बढ़ गयी, गांव-गांवके अुद्योग टूट गये और गांवके लोग शहरसे चीजें खरीदने लगे। अिस तरहसे पैसेके गुलाम होनेके कारण वे प्रेमको भूल गये। आजकल अिन लोगोंने पैसेकी विद्या बनायी है और अुसको अर्थशास्त्र नाम दिया है। अपने घरका पैसा कैसे बढ़ाना अिसकी वह विद्या है। लेकिन वह विद्या नहीं है बल्कि अविद्या है। जैसे किश्तीके अंदर पानी आ जाय तो किश्ती डूब जाती है; किश्तीके लिअे पानी चाहिये परन्तु किश्तीके बाहर, अंदर नहीं। अुसी तरह संपत्तिकी जरूरत है परन्तु समाजमें, घरमें नहीं। घरके अंदर संपत्ति आ जाय तो किश्तीके जैसी घरकी हालत होगी।

हम चाहते हैं कि हमारे गांवमें फसल खूब बढ़े, घर-घरमें चरखा चले, घर-घर गाय-बैल हों और सब बच्चोंको खूब दूध मिले, हरअेकके पास औजार हों, गांवमें कोअी भी आये तो अुसे खिलानेके लिअे हर घरमें खूब अनाज हो, बगीचेमें फल-फूल लदे हुअे हों, तरह-तरहकी तरकारियां हों। यह सब गांवमें खूब हो, लेकिन पैसा कम हो। यह पैसा तो अिसलिअे बनाया है कि अुससे लूटनेवालोंको सहूलियत होती है। कोअी भी चोर दो सौ रुपयेके नोट जेबमें डालकर चला जा सकता है। लेकिन दो सौ रुपयेका अनाज ले जाना अुसके लिअे मुश्किल होगा।

आज हालत अैसी है कि श्रीमानोंके पास पैसेके सिवाय कुछ नहीं है। न वे खेतमें काम करना जानते हैं न गायको दुहना जानते हैं, न चरखा चलाना जानते हैं। अिसलिअे अुनके पास न अनाज है, न फल-तरकारी है, न दूध-घी है, न कपड़ा है। लेकिन अुनके पास कागजके टुकड़े हैं और कुछ पत्थर हैं। कागज दिखाकर वे चाहे जो चीज लूट लेते हैं। अिन दिनों गांववाले भी कागजकी लालचमें आकर सब चीजें बेचते हैं। कागज न खाया जाता है, न पीया जाता है, न ओढ़ा जाता है। लेकिन गांव-गांवमें पैसेकी माया फैली हुअी है। अिसलिअे हर चीज पर कीमत चढ़ी हुअी है। पहले तो अपने देशमें दूध बेचना लोग पाप समझते थे। जिस किसीको दूधकी जरूरत होती थी अुसे दूध दे देते थे। लेकिन अिन दिनों तो जमीनकी भी कीमत पैसेमें की जाती है। यह बिलकुल ही गलत बात है। जमीन तो हमारी माता है। परमेश्वरकी देन है, अिसलिअे अुस पर सबका समान अधिकार है।

* * *

आज दुनियामें बहुत अशांति है। हिन्दुस्तानमें काफी दुःख पड़ा है। लेकिन जितना दुःख है अुतनी अशांति नहीं है। दुःख बहुत ज्यादा है और अशांति कम है। क्योंकि यहांके लोगोंके मनमें शांति भरी हुअी है। वर्षोंसे संतोंने जो तालीम लोगोंको दी है अुसके कारण यहांके लोगोंका दिमाग आपत्तिमें भी शांत रहता है। अुस हिसाबसे आज दुनियामें बहुत ज्यादा अशांति है। दुनियाके लोग अेक-दूसरेसे डरते हैं और खूब शस्त्र बढ़ाते हैं। अेकदमसे लाखों लोगोंको खत्म किया जा सके अैसे बम बनाते हैं।

हिन्दुस्तानकी हड्डियोंमें, खूनमें शांति है। अिसलिअे यहांके लोग आपत्तिमें भी शांत रहते हैं। परन्तु अगर हम आपत्तियां और दारिद्र्य मिटा देंगे तो यहां पर खूब शांति होगी और अुससे अेकता बढ़ेगी। अिसलिअे जो हमसे भी ज्यादा दुःखी हैं और दरिद्री हैं अुनकी तरफ हमें ध्यान देना चाहिये। गांव-गांवके लोग मिल-जुलकर काम करेंगे तो गांवमें कोअी दुःखी नहीं रहेगा। अिसलिअे हमने कहा था कि अगर हम चाहते हैं कि सारी दुनियामें शांति हो तो हमें गांव-गांवमें जमीनकी मालकियत मिटानी चाहिये। जमीन गांवकी बनानी चाहिये और कारखाने देशके। मालिक कोअी नहीं। यही सुख-प्राप्तिका साधन है। यह जो मैं-मेरा और तू-तेरा चलता है अुसी भेदके कारण दिल टूटे हुअे हैं। अड़ोसी-पड़ोसीके बीच भेद पड़े हुअे हैं, देश-देशके बीच, जाति-जातिके बीच भेद निर्माण हुअे हैं। हमें यह सारे भेद मिटाने हैं। हिन्दुस्तानके लोग अिस बातको जल्दसे जल्द समझेंगे। यहांके लोगोंको यह बात समझाना कठिन नहीं है कि हम अेक हैं। क्योंकि प्राचीन कालसे आज तक ऋषियोंने हमें यही सिखाया है।

अगर गांव-गांवमें यह वातावरण फैला तो फिर कानून अुसके पीछे पीछे आयेगा। कानून हमेशा पीछे आता है, आगे नहीं जाता है। लोगोंको खुद होकर आगे जाना होता है। और ऋषि, ज्ञानी और संत लोगोंको आगे ले जाते हैं। फिर कानून बनानेवाले अुनके पीछे जाकर कानून बनाते हैं। अिसलिअे जो सारी ताकत है वह लोगोंमें है। मनुष्यके हृदयमें और चिन्तनमें ताकत होती है। दुनियामें अेक तो विचारका बल है, दूसरा प्रेमका बल है, और तीसरा धर्मका बल है। चौथा बल है ही नहीं। कानूनवाला बल तो पीछे-पीछे आता है। अिसलिअे लोग प्रेमको, धर्मको और सत्यको समझेंगे तो सारा समाज बदल जायगा। लाखों-करोड़ों लोग अपना जीवन चलाते हैं तो कानूनसे नहीं चलाते हैं। कानून तो अुन्हें मालूम ही नहीं होता है। हिन्दुस्तानमें करोड़ों लोग स्नान किये बगैर भोजन नहीं करते हैं, तो क्या अिसके लिअे कोअी कानून बना है? लेकिन यहां पर वर्षोंसे प्रचार हुआ है कि स्नान किये बगैर खाना नहीं चाहिये। सत्पुरुषोंने गांव-गांव जाकर प्रचार किया है। अपना देश सत्पुरुषोंने बनाया है।

यह महापुरुषोंका देश है। यहांके लोग कभी संपत्तिको अुच्च स्थान नहीं देते। कोअी विलास करता हो या अिंग्लैण्ड-अमेरिकासे पढ़कर आया हो तो अुसे यहांके लोग बड़ा नहीं मानते हैं। किसीके पास राक्षसकी ताकत हो या शस्त्रास्त्र हो तो अुसे बड़ा नहीं मानते हैं। हां, डरके कारण किसीके बस हो जायं तो वह दूसरी बात है। परन्तु मनमें अैसे मनुष्यको बड़ा नहीं मानते हैं। जिनके मनमें प्रेम है, जीवनमें त्याग है, जो भगवान्‌के भक्त हैं अुन्हींको यहांके लोग बड़ा मानते हैं।

सिकंदर बादशाहकी कहानी है कि अुसने हिन्दुस्तानके राजाको हराया और वह मालिक बना। अेक दिन वह रास्तेसे जा रहा था तो अुसने देखा कि अेक साधु बैठा हुआ है। अुस साधुने सिकंदरको देखकर न सलाम किया, न वह अुठ कर खड़ा हुआ। सिकंदरने अुससे पूछा कि तू कौन है? तो अुसने कहा कि मैं दुनियाका मालिक हूं। यह सुनकर सिकंदर घबड़ा गया। अुसने सोचा कि मैं तो दुनियाको जीतनेके लिअे कितनी कोशिश करता हूं, मेरे पास कितनी बड़ी सेना है, और अिसके पास तो कुछ भी नहीं है। यह कैसे दुनियाका मालिक हो सकता है! अुसने साधुसे कहा कि तू नहीं जानता है कि मैं सिकंदर हूं, दुनियाका

www.vinoba.in

मालिक हूं। साधुने जवाब दिया कि मैं तो तुझे जानता ही नहीं। तो फिर तू दुनियाका मालिक कैसे बना? अैसे फकीर लोग हिन्दुस्तानमें पहले थे और आज भी हैं। अिसीलिअे हिन्दुस्तानके लोग ग्रामदानका काम बहुत जल्दी करेंगे।

हिन्दुस्तानके लोग संसारमें रहते हैं पर अुनका सारा चित्त परमेश्वरके पास रहता है। संसारको वे ज्यादा महत्त्व नहीं देते हैं। यही बात ठीक है। क्योंकि अिसीसे हिन्दुस्तानके लोग दस हजार सालसे टिके हुअे हैं। यहां पर कितने राजा आये और गये, लेकिन हिन्दुस्तानके लोग अुन्हें जानते ही नहीं। वे तो अेक ही राजाको जानते हैं। राजा रामको। दूसरे राजाको जानते ही नहीं। जहां पर राजाओंका हिसाब ही नहीं है, वहां पर राज-सत्तासे क्या काम बननेवाला है? हमें किसीने कहानी सुनायी थी कि यहां पर अेक बड़े आदमी आये थे तो यहांके लोगोंने पूछा कि क्या वह शेरकी शिकार कर सकेगा? वह तो शेरसे डरता था। यहांके लोग शेरोंके साथ रहते हैं। सांपोंका, कांटोंका मुकाबला करते हैं। निर्भयतासे अंधेरेमें कहीं भी चले जाते हैं। अगर अमेरिकाके मनुष्यको कहा जाय कि रातको अंधेरेमें खेतमें जाकर घास काटो तो वह डर जायेगा। हमने फ्रेंच भाषामें अेक कविता पढ़ी थी। अुसमें फ्रांसकी महिमा गायी हुअी थी। अुसमें कहा गया था कि हम कैसे भाग्यवान हैं, क्योंकि हमारे देशमें हिन्दुस्तानके जैसे सांप नहीं हैं। अिस तरह वे लोग सांपके नामसे ही डरते हैं। लेकिन यहांके लोग तो सांपसे बिलकुल डरते नहीं और कुछ लोग तो अुसे देवता भी मानते हैं। अैसे अद्‌भुत और त्यागी जो लोग हैं अुन्हें जरा विचार देनेकी जरूरत है।

हम मानते हैं कि आप पैसेकी मायासे मुक्त हो सकेंगे तो आजाद हो जायंगे। जिस तरह आज आपने तय किया कि हमारे गांवमें भूमिहीन कोअी नहीं रहेगा और भूमि-मालिक कोअी न रहेगा, अुसी तरह आपको तय करना चाहिये कि हमारे गांवमें बाहरका कपड़ा नहीं आयेगा, हम अपना कपड़ा खुद बनायेंगे। आपको संकल्प करना चाहिये कि हमारे गांवमें खादी ही चलेगी। अुसी तरह आपको शराब, बीड़ी आदि बुरी आदतें छोड़नी चाहिये। कुछ लोगोंके मनमें यह भ्रम है कि देवताको शराबका भोग देनेसे देवता खुश हो जाते हैं। लेकिन यह बात गलत है। देवताको तो स्वच्छ पानी, फूल, पत्ती आदि चढ़ाना होता है। विष्णु भगवान्‌को तुलसी-पत्र चाहिये। शंकर भगवान्‌को बिल्व-पत्र चाहिये, गणपतिको दूर्वा (घास) चाहिये। देवताओंको तो प्रेम चाहिये। और धर्मके तौर पर फलफूल चढ़ाना होता है। आज आपने तय किया कि 'आम गांरे भूमिहीन रहीबे नाही रहीबे नाही,' अुसी तरह आपको तय करना होगा कि 'आम गांरे शराब सिगरेट रहीब नाही, बाहरका कपड़ा रहीब नाही, मालकियत रहीब नाही, झगड़ा रहीब नाही, मूर्खता रहीब नाही।'

आपने ग्रामदान देकर नींव डाली है। अब आपको मकान बनाना होगा। अुसमें हम लोग भी हमसे जितनी हो सकती है अुतनी मदद देंगे। आप मिलजुल कर काम करना सीखेंगे तो आपको बाहरकी मदद भी आसानीसे मिलेगी, आपके अंदर ताकत भी बढ़ेगी और अीश्वरकी कृपा होगी। आपके गांवमें मधुर वाणी ही सुनाअी देनी चाहिये, कटु शब्द नहीं सुनाअी देना चाहिये। हमेशा सत्य ही बोलना चाहिये। आप दो हाथोंसे काम करेंगे, अेक-दूसरे पर प्यार करेंगे और रामनामका जप करेंगे तो आप सुखी होंगे। हम परमेश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि आपकी सद्‌बुद्धि अिसी तरह बढ़ती रहे, आपको शांति और सुखका लाभ हो।

विनोबा

सुराज्य नहीं, स्वराज्य चाहिये

[ता० २४-९-'५५ को कुजेन्द्री (अुत्कल) में दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

आजकी हालत अैसी है कि प्राचीन परंपरामें और मौजूदा हालतमें हम कुछ ज्यादा फरक नहीं देखते हैं। अकबर राजा हुआ, तो हिन्दुस्तान सुखी हुआ। औरंगजेब हुआ तो हिन्दुस्तान दुःखी हुआ। आज भी करीब-करीब वही हालत है। बावजूद अिसके कि वोट लेनेका अेक स्वांग या नाटक चलता है।

आज हम कह सकते हैं कि हम भाग्यवान हैं, क्योंकि हमें पंडित नेहरू जैसे विवेकी नेता मिले हैं। वैसे ही अकबरके जमानेमें लोग अपनेको भाग्यवान समझते थे और कहते थे कि हमें अच्छा बादशाह मिला है। अकबरके जमानेमें लोग भाग्यवान थे और औरंगजेबके जमानेमें लोग कंबख्त बन गये। अुसी तरह पंडित नेहरूके नेतृत्वमें हम भाग्यवान कहे जायंगे तो दूसरे किसीके नेतृत्वमें अभागे बनेंगे। अिसलिअे कोअी केन्द्रित सत्ता हो, जिसके हाथमें सेनाकी शक्ति हो और वही सत्ता सारे देशके लिअे योजना बनाये यह बात ही गलत है। देशमें शांति रखना या देशको अशांतिमें डुबाना, यह ताकत केन्द्रीय शासनमें रहती है और लोग वैसेके वैसे मूरख रह जाते हैं। फिर अुनके नेता दावा करते हैं कि हमने जो किया, अुसको जनताका समर्थन है। हम हिटलरको तानाशाह कहते हैं, परन्तु वह दावा करता था कि मैं लोगों द्वारा चुना हुआ हूं, बहुत अधिक वोटसे चुना हुआ हूं। आजकी दुनियाकी हालत अैसी है कि बड़े-बड़े लोगोंके हाथमें सत्ता रहती है और सेना भी रहती है और वे आम लोगों पर सत्ता चलाते हैं। अमेरिकाका प्रेसिडेन्ट रूजवेल्ट चार दफा चुनकर आया। अिस तरह लोगोंके और सरकारके बीच जो पाल्य-पालक संबंध है, वह जैसे राजाओंके जमानेमें था वैसे आज भी है। आज आप देखते हैं कि हिन्दुस्तानमें अलग अलग प्रदेशोंमें अलग-अलग प्रकारके कानून बनते हैं और कअी दफा परस्पर-विरोधी कानून भी बनते हैं। बम्बअी और मद्रासमें शराबबंदी है और बिहार और बंगालमें अच्छी तरहसे नशाखोरी चल रही है और काशी नगरी तो नशेमें डूबी हुअी ही है। गंगास्नान और मद्यपान, यह वहांका कार्यक्रम है। अब क्या कहा जा सकता है कि बम्बअी और मद्रासमें लोकमत शराबबंदीके अनुकूल है और बिहार, बंगाल और काशीका लोकमत शराबबंदीके प्रतिकूल है? अिसमें लोकमतका कोअी सवाल नहीं। वहां पर अिस मामलेमें भाग्यवान शासक मिले हैं और यहां पर नहीं मिले हैं।

अतः हमें यह समझना होगा कि जनताको सिर्फ सुशासनके लिअे नहीं, बल्कि स्वशासनके लिअे तैयार करना है।

विनोबा

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

विषय-सूची

		पृष्ठ
गलत और अन्यायपूर्ण	वैकुण्ठभाअी महेता	३१३
कल्याण-राज्य बनाम सर्वोदय-राज्य-४	पी० श्रीनिवासाचारी	३१४
हमारा वर्तमान संकट	मगनभाअी देसाअी	३१६
भारतका संक्रान्ति काल		३१७
पिछड़ी जातियां और नौकरीकी योग्यता	मगनभाअी देसाअी	३१८
भारतकी संस्कृतिका स्वरूप	विनोबा	३१९
सुराज्य नहीं, स्वराज्य चाहिये	विनोबा	३२०

www.vinoba.in